International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

पूर्वी चम्पारण जिले के महिलाओं की शैक्षणिक समस्याएँ

मनीषा
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग
बी0 बार0 यू0 बिहार विश्वविद्यालय
मुजफ्फरपुर, बिहार।

Article Info
Volume 7, Issue 6
Page Number : 498-500

Publication Issue :
November-December-2020

Article History
Accepted : 10 Nov 2020
Published : 20 Nov 2020

किसी भी प्रकार की शिक्षा हर किसी के जीवन का अभिन्न अंग है। बिना शिक्षा किसी के भी जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। शिक्षण जीवन के हर पहलू को विशिष्ट रुप से असर करता है। इस तरह शिक्षण स्त्री पुरुष दोंनो को समान हक है। मगर आज भी स्त्रियों को शिक्षित बनाने के लिए कोई महत्व नहीं दिया जाता है।

किसी भी देश, समाज को पूर्ण रुप से विकसित और सुदृढ़ होने के लिए महिलाओं को शिक्षित होना अत्यन्त जरुरी है। यह एक तरह से उस दवाई की भाँति है जो मरीज को ठीक होने में मदद करती है। महिला शिक्षा एक बहुत बड़ा मुद्दा है। पूर्वी चम्पारण को आर्थिक रुप से तथा सामाजिक रुप से विकसित बनाने में शिक्षित महिला उस तरह का औजार है जो समाज पर अपने परिवार पर अपने हुनर तथा ज्ञान से सकारात्मक प्रभाव डालती है।

संस्कृत में यह उक्ति प्रसिद्ध है :- ''नास्ति विद्यासमं चक्षुनार्स्ति मातृ समोगुरवः अर्थात् इस दुनिया में विद्या के समान नेत्र नहीं है और माता के समान गुरु नहीं है।''

स्त्री शिक्षा समाज का आधार है। समाज द्वारा पुरुष को शिक्षित करने का लाभ केवल परिवार तक ही सीमित रहता है जबकि एक स्त्री शिक्षा का पूर्ण विकास समाज, परिवार एवं सम्पूर्ण राष्ट्र को पहुँचाती है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

''जब एक पुरुष शिक्षित होता है तो वह केवल परिवार को शिक्षित करता है जबकि स्त्री शिक्षित होती है तो परिवार, समाज एवं राष्ट्र को शिक्षित करती है'' यह मानना था महात्मा गाँधी का।

हम सब जानते है कि स्त्री शिक्षा समाज को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण विषय है। आज जहाँ सारा विश्व, देश,समाज महिला सशक्तीकरण का नारा लगाता है वहीं आज भी कई जगहों पर महिलाएँ अपने ही घर में शोषित हो रही है अशिक्षा के कारण। और इसका जीता जागता एक जगह है - पूर्वी चम्पारण।

पूर्वी चम्पारण में आज भी देखा जाए तो स्त्री शिक्षा का जितना विकास होना चाहिए वह नहीं हो पाया है। आज भी वहाँ वही रुढ़ीवादी परम्परा चली आ रही है कि महिला शिक्षित होकर क्या करेंगी, उसे करना है तो घर काम, परिवार की देखभाल। इसी रुढ़ीवादिता के कारण आज भी पूर्वी चम्पारण की महिलाएँ उस अनुसार शिक्षित नहीं हो पाई है जितना उन्हें होना चाहिए।

पूर्वी चम्पारण की महिलाओं को वर्त्तमान में भी कई शैक्षणिक समस्याओं से गुजरना पर रहा है। हमारा समाज पुरुष प्रधान है। पूर्वी चम्पारण में आज भी महिलाओं को पुरुषों के बराबर दर्जा नहीं दिया जाता है। आज भी उन्हें घर की चहारदीवारी तक सीमित कर दिया जाता है। हालाकि ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में कुछ मायने में स्थिति अच्छी है। परन्तु इस तथ्य से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है कि आज भी देश की आधी आबादी गाँव में ही बसती है।

पूर्वी चम्पारण में प्राचीन से लेकर वर्त्तमान में भी महिलाओं की सुरक्षा एक बड़ा मुद्दा बना हुआ है और इसका मुख्य कारण महिलाओं का अशिक्षित होना है। हमने पढ़ा और सुना है कि प्राचीन काल से ही पूर्वी चम्पारण में महिलाओं के शिक्षा पर विवाद रहा है। वहाँ के लोगों के अन्दर महिलाओं का शिक्षित होना सबसे खराब बात मानी जाती थी। और इसका मुख्य कारण वहाँ के पुरुषों और समाज में रुढ़िवादिता है।

शुरु से ही पूर्वी चम्पारण महिलाओं की शिक्षा समस्याओं से घिरा हुआ है। और इसका मुख्य कारण लोगों में असामनता। अर्थात् यहाँ के लोग पुरुष और स्त्री के बीच भेदभाव रखते थे और उनका मानना था कि महिला कितनी भी शिक्षित हो जाए, रहना तो उसे घर के चारदीवारी में ही है। पुरुष पढ़ेगा तो बाहर जाएगा रोजगार करेगा जिससे घर परिवार का खर्चा चलेगा एवं परविार के लोगों भरण-पोषण होगा।

लिंग असामनता के साथ-साथ विचार भी कुछ अच्छे नहीं थे। समाज के कुछ दबंग जैसे जमींदार, बड़े लोगों को पसंद नहीं था कि महिलाएँ घर की चौखट लाँघकर पुरुषों के बीच बैठकर शिक्षा ग्रहण करें। महिलाओं की घर का चौखट पार करने का मतलब था कि वो बदचलन है। उनके दबाव के कारण महिलाएँ चाहकर भी शिक्षा ग्रहण करने का सपना भूल जाती है।

ऐसा नहीं है कि यह स्थिति सिर्फ प्राचीन में ही थी बल्कि यह स्थिति आज भी यानि वर्त्तमान में भी उपस्थित है । रुढ़िवादी सांस्कृतिक नजरिए के कारण महिला शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती साथ ही साथ इसका एक सबसे मुख्य कारण गरीबी भी है । आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण भी वे शिक्षा से वंचित रह जाती है ।

पूर्वी चम्पारण क्या ! आज पूरे समाज में देखिये तो महिलाएँ पुरुषों की तुलना में हिंसा और खतरे के प्रति अधिक संवेदनशील हैं । महिलाओं के खिलाफ कई अपराध आज भी प्रचलित है जैसे :- दहेज, घरेलु हिंसा, देह व्यापार, यौन उत्पीड़न आदि । जिस कारण महिलाओं का केवल घर से बाहर निकलने नहीं बल्कि स्कूल-कॉलेज तक जाने पर भी रोक लगा देता है ।

पूर्वी चम्पारण में बलात्कार, लूटपाट, छेड़छाड़ का मामला बहुत देखा जाता है जो कि पहले भी था और आज भी है जिस कारण महिलाओं की शिक्षा बाधित हो रही है।

''विश्व की औरतो अपनी
अपनी शक्ति को पहचानों
जंजीर को तोड़ो
मुक्त होकर
अपने लिए एक नई दुनिया बनाओ
जहाँ न्याय हो ताकि
हम मनुष्य की तरह जी सके ।''

निष्कर्ष :- सारी बातों को देखते हुए कह सकते है कि एक शिक्षित महिला एक जाइ की छड़ी की तरह है जो समृद्धि, स्वास्थ्य और गर्व लाती है । महिला शिक्षा के विकास को प्रतिबंधित करने वाले कारक मुख्य रुप से सामाजिक है और अगर हम सामाजिक - आर्थिक विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते है तो हमें उन्हें पहचानने और उन्हें खात्म करने की आवश्यकता है । पूर्वी चम्पारण में होने वाले शिक्षण समस्याओं को दूर कर उसे भी विकास के पथ पर आगे ले जा सकते है ।

संदर्भ सूची :- जे0 सी0 अग्रवाल (1 जनवरी 2009) भारत में नारी शिक्षा, प्रभात प्रकाशन ।

सुमन कृष्ण कांत (1 सितंबर 2001) इक्कीसवीं सदी की ओर, राजकमल प्रकाशन ।

लाल राम बिहारी - शिक्षा और समाज, मकैया विद्यावती, भारतीय शिक्षा की समस्याएँ और प्रवृत्तियाँ।

सैयेदन, के0 जी0 - शिक्षा शास्त्र, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।

रावत, प्यारे लाल - प्राचीन व आधुनिक भारतीय शिक्षा का अतिहास, भारत पब्लिकेशन ।